फ़ज़ाइले दुआ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔

बन्दा का ख़ुदा से दुआ करना भी इबादत और बाइसे ख़ुश्नूदीए मौला है और दुआ ख़ुद ज़िक्र भी है। लिहाज़ा ज़ैल में दुआ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ह़दीसें पेश की जाती हैं। ताकि बन्दों को दुआ का शौक़ हो और उसकी अहमियत से आगाह हों।

1. ह़ज़रत नोमान बिन बशीर ने कहा कि रसूले अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ दुआ इबादत ही है, फिर हु.जूर ने .कुरआन की यह आयत पढ़ी–

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ

(इमाम अह़मद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, मिश्कात स. 194)

2. ह़ज़रत अनस रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि कहा

हुज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ दुआ इबादत का मग़्ज़ है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जि. 2 स.173 रशीदिया)

3. ह़ज़रत अबू हुरैरा रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हु.ज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया لَيْسَ شَيْءٌ اَكْرَمَ عَلَى اللّٰهِ مِنَ الدُّعَاءِ ख़ुदा के यहाँ दुआ से बढ़ कर किसी चीज़ की क़द्र नहीं।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ ऐज़न)

चूँकि दुआ में अपनी अ़ब्दियत का मुकम्मल इज़हार होता है और ख़ुदा की बरतरी व .कुदरत का एलान भी। इस लिए ख़ुदाए तआ़ला के यहाँ बन्दा की दुआ सब से ज़्यादा प्यारी और बा वक़अ़त होती है।

4. ह़ज़रत अबू हुरैरा रदि़यल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम में कोई दुआ करे तो यह न कहे कि ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे अगर तू चाहे मुझ पर रह़म फ़रमा अगर तू चाहे मुझे रिज़्क़ दे अगर तू चाहे। बल्कि चाहिए कि अपने सवाल पर पूरा भरोसा करके माँगे क्योंकि ख़ुदाए तआ़ला जो चाहता

है करता है, कोई उस पर जब्र करने वाला नहीं है।

(बुख़ारी, मिश्कात स. 194)

यानी जो माँगना हो पूरे यक़ीन के साथ माँगे कि उसके क़ब्ज़ए व इख़्तियार में तो सब कुछ है। फिर शक व तरद्दुद की क्या वजह। यानी कहे ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, रहम फ़रमा वग़ैरह।

5. उन्हीं से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। बन्दे की दुआ क़बूल होती है जब तक कि किसी गुनाह या क़ातअ़े रहम (रिश्ता तोड़ना) की दुआ न करे और जब तक जल्दी न करे। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह जल्दी करना क्या है, फ़रमाया (दुआ करने वाला) कहता है बार बार दुआ किया लेकिन अपने लिए क़बूल होती नहीं देखता। तो ऐसे वक़्त आजिज़ होकर वह दुआ ही छोड़ देता है। (मुस्लिम, मिश्कात स. 194)

6. उन्हीं से मरवी है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया مَنْ لَّمْ يَسْأَلِ اللّٰهَ يَغْضَبْ عَلَيْهِ जो अल्लाह से दुआ नहीं करता उस पर अल्लाह तआला ग़ज़बनाक होता है। (तिर्मिज़ी, मिश्कात स. 195)

इससे मालूम हुआ कि दुआ न करना ख़ुदा के क़हर व ग़ज़ब को दावत देना है और उससे दुआ करते रहना बाइसे नुज़ूले रहमत है।

7. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया— दुआ में सुस्ती मत करो क्यों कि जो दुआ करता रहेगा हरगिज़ हलाकत में नहीं पड़ेगा।

(इब्ने हब्बान, हाकिम, हिस्ने हिसीन स.12 मुजतबाई)

8. जिसे यह बात पसन्द हो कि सख़्तियों और तकलीफ़ों में उसकी दुआ क़बूल हो तो उसे ख़ुशी और आराम के वक़्त कस्रत से दुआ करनी चाहिए।

(तिर्मिज़ी 2/174)

इससे वह लोग सबक़ हासिल करें जो मसाइब व आलाम के वक़्त तो ख़ूब अल्लाह अल्लाह करने लगते हैं ओर ज़रा देर हुई दुआ क़बूल होने में तो घबरा कर फ़ौल फ़ूल बकने लगते हैं। ऐसों को चाहिए कि ख़ुशी व आराम के लमहात में भी ख़ुदा की याद करते रहें।

9. दुआ मोमिन का हथियार दीन का सुतून और आसमान व ज़मीन का नूर है।

(हिस्ने हिसीन स.12, जामेअ़ सग़ीर जि. 1/655)

10. दुआ रहमत की कुन्जी है और वजू नमाज़ की कुन्जी और नमाज़ जन्नत की कुन्जी है।

(जामेअ़ सग़ीर 2/654)

11. दुआ बलाओं को दूर करती है।

(जामेअ़ सग़ीर 2/656)

12. दुआ खुदा तक नहीं पहुँचती जब तक कि हुजूरे अक़दस और उनके अहले बैत पर दुरूद न पढ़ा जाये। स़ल्लल्लाहु अ़लन्–नबीय्यिल् उम्मिय्यि व आलिही व सल्ल–म॰ (जामेअ़ सग़ीर 2/656)

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ

अफ़ज़लुज़्ज़िक्र

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ

सुबहानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु॰ हदीस शरीफ़ में इस कलिमे

की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। हदीस में है कि .कुरआन के बाद यह सब से अफ़ज़ल कलाम है और यह .कुरआन ही से माख़ूज़ है।

✱ जिसने इसको पढ़ा हर हरफ़ के एवज़ दस नेकियां उसके लिए लिखी जाती हैं। ✱ हु.जूर ने फ़रमाया इन कलिमात का कहना मुझे उन सब से ज़्यादा महबूब है जिन पर आफ़ताब तुलूअ़ करे (यानी दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा पसन्दीदा है)। ✱ इनमें के हर कलिमे के एवज़ जन्नत में तेरे लिए एक दरख़्त लगाया जाएगा। ✱ यह तुम्हारे लिए जहन्नम की आग से बचाव का आला है। ✱ इसका हर कलिमा एक सदक़ा है।

और अगर इसके साथ ला हौ–ल व ला .कुव्व–त इल्ला बिल्ला–हिल्–अ़लीय्यिल् अज़ीम॰ का आख़िर में इज़ाफ़ा कर दो तो फिर इसकी फ़ज़ीलत और बढ़ जाती है। हदीस में आया है कि यह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है। (हिस्ने हिसीन 196–197)

मस्जिद जाते वक़्त पढ़ने की दुआ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो घर से नमाज़ पढ़ने के लिए निकले और (मस्जिद जाते हुए) इस दुआ को पढ़े तो अल्लाह तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए मुक़र्रर फ़रमाता है जो उसकी मग़फ़िरत की दुआ करते हैं और हक़ तआ़ला उस पर मुतवज्जह होता है उस वक़्त तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाये, वह दुआ यह है–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِيْنَ عَلَيْكَ وَبِحَقِّ
مَمْشَایَ هٰذَا اِلَيْكَ فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ بَطَرًا وَّلَا
اَشَرًا وَّلَا رِيَآءً وَّلَا سُمْعَةً خَرَجْتُ اتِّقَاءَ سَخَطِكَ
وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ اَسْئَلُكَ اَنْ تُنْقِذَنِیْ مِنَ النَّارِ
وَاَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ
اِلَّآ اَنْتَ (ايضًا)

अल्लाहुम्–म इन्नी अस्–अलु–क बि–ह़क़्–क़िस्साइली–न अ़लै–क व बि–ह़क़्क़ि मम्शा–य हाज़ा इलै–क फ़इन्नी लम् अख़्रुज् ब–त–रंव्–वला रियाअंव्–व ला सुम्अ़तन् ख़–रज्तुत्–तिक़ा–अ सख़्ति–क वब्तिग़ा–अ मर्दाति–क अस्–अलु–क अन् तुन्क़िज़्नी मिनन्नारि व अन् तग़्फ़िर्ली .जुनूबी इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्.जुनू–ब इल्ला अन्–त॰

मस्जिद में दाख़िल होने और निकलने की दुआ

जब मस्जिद में जाये तो कहे–

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ. اَللّٰهُمَّ
افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि॰ अल्लाहुम्–मफ़्तह़्ली अब्वा–ब रह़्मति–क॰

और जब निकले तो कहे–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ۔ (ایضاً ۳۹۵)

अल्लाहुम्–म इन्नी अस्–अलु–क मिन फ़द्लि–क。 (ऐज़न स. 395) एक रिवायत में है निकलते वक़्त दुरूद व सलाम पढ़ ले फिर दुआ करे।

हर नमाज़ के बाद की दुआयें

1. हज़रत मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने कहा, हु.जूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया ऐ मुआज़ ख़ुदा की क़सम बेशक मैं तुमको दोस्त रखता हूँ फिर फ़रमाया, ऐ मआज़ मैं तुम को वसीयत करता हूँ, हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ लिया करना, छोड़ना हरगिज़ नहीं।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِكَ وَشُکْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ (ابوداؤد ص ۲۱۳ ج ۱ رشیدیہ)

अल्लाहुम्म अ–इन्नी अला ज़िक्रि–क व शुक्रि–क व. हुस्नि अिबा–दति–क。 (अबू दाऊद 1/213)

2. हज़रत उक़बा बिन आमिर से मरवी कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे हर नमाज़ के बाद قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ اور قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

कुल् अऊ.जु बि–रब्बिल् फ़–लक़ि और .कुल् अऊ.जु बि–रब्बिन्नासि पढ़ने का हुक्म दिया।

(अबू दाऊद ऐज़न)

3. हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हु.जूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर यह दुआ फ़रमाया करते।

اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (ابوداؤد، ایضاً، بخاری ج ۲ ص ۹۴۵)

अल्लाहुम्म आतिना फ़िद्दुन्या ह़–स–नतंव्–व फ़िल् आख़ि–रतिः ह़–स–नतंव्–व क़िना अज़ाबन्नार。

दुआ करने से पहले और आख़िर में दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ ले कि क़बूलियते दुआ का वसीला है।

फ़ज्र की नमाज़ को जाते हुए पढ़ने की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि एक रात मैं हुजूर के घर था कि हु.जूर जब सुबह की नमाज़ के लिए निकले तो रास्ते में यह पढ़ते हुए तशरीफ़ लेगए।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ لِسَانِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ خَلْفِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ اَمَامِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ فَوْقِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ تَحْتِیْ نُوْرًا، وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

अल्लाहुम्–मज्अ़ल् फ़ी क़ल्बी नूरंव्–वज्अ़ल् फ़ी लिसानी नूरंव्–वज्अ़ल् फ़ी सम्अ़ी नूरंव्–वज्अ़ल् फ़ी बसरी नूरंव वजअ़ल मिन् ख़ल्फ़ी नूरंव्–वज्अ़ल् मिन् अमामी नूरंव्–वज्अ़ल् मिन् फ़ौक़ी नूरंव्–वज्अ़ल् तह़्ती नूरा॰ अल्लाहुम्म अअ़्तिनी नूरा॰

इस्तिआज़ा

1. ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दुआ़ करते तो फ़रमाते–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ۔ (ابوداؤد ج ١ ص ٢١٦)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जु बि–क मि–नश्–शिक़ाक़ि वन्निफ़ाक़ि व सूअिल् अख़्लाक़ि॰

2. ह़ज़रत अनस से मरवी है कि हु.जूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाते–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَیِّئِ الْاَسْقَامِ (ایضًا)

अऊ़जु बि–क मिनल्–बर्सि वल्जुनूनि वल्जुज़ामि व सय्यिल्–अस्क़ाम॰

3. ह़ज़रत अबू हुरैरा से मरवी कि हु.जूर स़ल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाते–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْاَرْبَعِ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ دُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ۔ (ابوداؤد ج ١ ص٢١٦)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जुबि–क मिनल् अर्–बअ़ि मिन् अ़िल्मिल्–ला यन्फ़.अु व मिन् क़ल्बिल्–ला यख़्श.अु व मिन् नफ़्सिल्–ला तश्ब.अु व मिन् दुआ़इल्–ला युस्म.अु॰

जुमा के दिन दुरूद शरीफ़ की कस्रत

हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारे दिनों में सब से अफ़ज़ल दिन जुमा का दिन है लिहाज़ा उस दिन मुझ पर बकस्रत दुरूद पढ़ा करो, क्योंकि तुम लोगों का दुरूद शरीफ़ मेरे हु.जूर पेश किया जाता है। स़ह़ाबए किराम रदि़यल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब क़ब्र शरीफ़ में आपका जिस्म मुबारक बिखर कर पुरानी हड्डियों की सूरत में हो जाएगा तो हम लोगों का

दुरूद शरीफ़ कैसे आपके दरबार में पेश हुआ करेगा? तो हु.जूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–

اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ

इन्नल्ला–ह ह़र्र–म अ़लल्–अर्दि़ अज्सादल्ल–अम्बियाअि॰ यानी अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़राते अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है। (अबू दाऊद जि. 1 स. 221)

ज़रूरी तम्बीह

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि तमाम अम्बियाए किराम अ़लैहिमुस्सलाम के मुक़द्दस अजसाम उनकी मुबारक क़ब्रों में सलामत रहते हैं और ज़मीन पर ह़ज़रत ह़क़ जल्ल जलालुहू ने ह़राम फ़रमा दिया है कि उनके मुक़द्दस जिस्मों पर किसी क़िस्म का तग़ैयुर व तबद्दुल पैदा करे। जब तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की यह शान है तो भला हु.जूर सय्यिदुल अम्बिया व सय्यिदुल मुरसलीन और इमामुल अम्बिया व ख़ात्मुन्नबीईन स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुक़द्दस जिस्मे अनवर को ज़मीन क्योंकर खा

सकती है। इस लिए तमाम उलमाए उम्मत व औलियाए मिल्लत का यही अक़ीदा है कि हु.जूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी क़ब्रे अतहर में ज़िन्दा हैं और ख़ुदा के हुक्म से बड़े बड़े तसर्रुफ़ात फ़रमाते रहते हैं और अपनी खुदा–दाद पैग़म्बराना ताक़तों और मोअ़जेज़ाना ताक़तों से अपनी उम्मत की मुश्किल कुशाई और उनकी फ़रियाद रसी फ़रमाते रहते हैं। ख़ूब याद रखिये कि जो शख़्स इसके ख़िलाफ़ अक़ीदा रखे वह यक़ीनन बारगाहे अक़दस का गुस्ताख़, बद–अक़ीदा गुमराह और अहले सुन्नत के मज़हब से ख़ारिज है।

(सीरतुलमुस्तफ़ा कलाँ स.479 अज़ शैख़ुलहदीस अ़ल्लामा अ़ब्दुलमुस्तफ़ा आज़मी अ़लैहिर्रहमा)

मजलिस से उठने की दुआ

हु.जूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो किसी मजलिस से उठते वक़्त यह दुआ पढ़ लेता है– سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

सुब्हा–न–कल्लाहुम्–म व बिहम्दि–क ला इला–ह इल्ला अन्–त अस्तग़्फ़िरु–क व अतूबु इलै–क॰

अल्लाह तआ़ला उस मजलिस में जो कुछ हुआ होता है वह माफ़ कर देता है।

(शरह मआ़नीयुल आसार जि. 2 स. 367 किताबुल क़राहत)

अबू दाऊद की रिवायत में तीन मर्तबा पढ़ने का हुक्म है।

(अबू दाऊद स. 667)

सोते और जागते वक़्त की दुआ

1. हु.जूर अ़लैहिस्स़लातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स बिछौने पर यह दुआ़ तीन मर्तबा पढ़ कर सो रहे तो अल्लाह तआ़ला उसके तमाम गुनाहों को बख़्श देगा अगरचे उसके गुनाह दरख़्तों के पत्तों और टीलों की रेत की तादाद में हों।

(तिर्मिज़ी जि. 2 स. 175 रशीदिया)

1. اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ۔

अस्तग़्फ़िरुल्ला–हल्लज़ी ला इला–ह इल्ल हुवल्––ह़य्युल्–क़य्यूमु व अतूबु इलैहि॰

2. हु.ज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सोते वक़्त यह दुआ पढ़ा करते थे–

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

अल्लाहुम्–म बि–इस्मि–क अमूतु व अह़्या॰

3. सुब्ह़ानल्लाहि سُبْحَانَ اللّٰهِ और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अल्ह़म्दु लिल्लाहि तैंतीस तैंतीस (33–33) बार अल्लाहु अक्बर اَللّٰهُ اَكْبَرُ चौंतीस बार और اٰيَةُ الْكُرْسِىْ आयतलकुर्सी एक बाद पढ़े।

4. दोनों हाथों को मिला कर قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ कुल हुवल्लाहु अहद् قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ कुल् अऊ़जु बि–रब्बिल् फ़–लक़ि– قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ कुल् अऊ़जु बि–रब्बि न्नासि तीनों सूरतें पूरी पढ़ कर दम करे और हाथों को सर से पाँव तक जहां तक हो सके मल ले। तीन मर्तबा ऐसा ही करे, फिर सोये। (ह़िस्ने ह़िसीन 57–58 बुख़ारी जि. 2 स. 855)

5. और जब नींद से बेदार होते तो यह दुआ पढ़ते थे–

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيٰى نَفْسِىْ بَعْدَ مَا اَمَاتَهَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्–लज़ी अह़्या नफ़्सी बअ्–द मा अमा–तहा व इलैहिन्–नुशूर॰ (तिर्मिज़ी जि. 2 स. 178)

6. या

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا
وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़्याना बअ्–द मा अमा–तना व इलैहिन्–नुशूर॰

(बुख़ारी, अबू दाऊद स. 688)

रात में जागे तो क्या पढ़े?

हु.ज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रात में नींद से बेदार हो तो यह दुआ माँगे तो वह मक़बूल होगी, और वुज़ू करके जो नमाज़ पढ़ेगा वह नमाज़ भी मक़बूल होगी।

(तिर्मिज़ी जि. 2 स. 177)

वह दुआ यह है–

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّسُبْحَانَ
اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू लहुल्मुल्कु व लहुल् ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् व सुब्ह़ानल्लाहि वल्ह़म्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला ह़ौ–ल व ला . कुव्व–तः इल्ला बिल्लाहि॰

जो पढ़े जन्नत वाजिब हो

हु.जूरे अनवर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो इस दुआ़ को पढ़ता रहे उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ
(صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) رَسُوْلًا۔ (ابوداؤد ج ۱ ص ۲۱۴ رشیدیہ)

रदीतु बिल्लाहि रब्बंव्–व बिल्–इस्लामि दीनंव्–व बि–मुह़म्मदिन् रसूला॰

(अबू दाऊद जि. 1 स. 214 रशीदिया)

चाहिए कि हर नमाज़ के बाद 3–3 बार पढ़ ले या सुबह व शाम।

सययेदुल इस्तिग़फ़ार

हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुसलमान यक़ीने क़ल्ब के साथ दिन में इस दुआ़ को पढ़ लेगा अगर उस दिन शाम से पहले मरेगा तो जन्नती होगा और अगर रात में पढ़ लेगा और सुबह़ से पहले मरेगा तो जन्नती होगा। इस दुआ़ का नाम सय्येदुल इस्तिग़फ़ार है, जो यह है–

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا
عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا

اُسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ (بخاری ج ۲ ص ۹۳۳ - اصح المطابع)

अल्लाहुम्म अन्–त रब्बी ला इला–ह इल्ला अन्–त ख़–लक़्तनी व अना अ़ब्दु–क व अना अ़ला अ़हि्द–क व वअ़्दि–क मस्त–त़अ़्तु अऊ.ज़ुबि–क मिन् शर्रि मा स़–नअ़्तु अबूउ ल–क बिनिअ़्–मति–क अ़लय्–य व अबूउ ल–क बि–ज़म्बी फ़ग़्फ़िर्ली फ़–इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़.ज़ुनू–ब इल्ला अन्–त।

(बुख़ारी जि. 2 स. 933, असहुल मत़ाबेअ)

खाने की दुआ़यें

खाना बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम। पढ़ कर खाये कि जो खाना बग़ैर बिस्मिल्लाह के खाया जाता है शैत़ान उस में शरीक हो जाता है। या कहे–

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ- बिस्मिल्लाहि व अ़ला बर्–कतिल्लाहि। फिर खाने के बाद मुन्दर्जा ज़ैल दुआ़यें पढ़े–

1. ह़ज़रत अबू उमामा रदि़यल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने से जब दस्तरख़्वान उठाया जाता था तो आप यह दुआ़ पढ़ते थे– اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا (ترمذی ج ۲ ص ۱۸۳)

अलह़म्दु लिल्लाहि ह़म्दन् कसी़रन् तय्यिबम् मुबा–रकन् फ़ीहि ग़ै–र मुवद्–दअ़िंव् वला मुस्तग़्नन् अ़न्हु रब्बना।

(तिर्मिज़ी जि. 2 स. 183)

2. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब खाने से फ़ारिग़ होते तो यह दुआ़ करते– اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِيْنَ (ابوداؤد ص ۵۳۸ کتاب الاطعمہ)

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्–लज़ी अत्अ़मना व सक़ाना व ज–अ़लना मुस्लिमीन।

(अबू दाऊद स. 538 किताबुल अत़इम्मा)

3. जब दूध पिये तो यह दुआ़ करे–

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ (ترمذی ج۲ ص۱۸۳)

अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ीहि व ज़िद्ना मिन्हु॰

मेज़बान के लिए पढ़ने की दुआ

जब किसी के यहाँ खाना खाये, या किसी का दिया हुआ अपने यहाँ खाये तो खाने के बाद की दुआयें पढ़ ले फिर यह दुआयें ख़ास मेज़बान के लिए करे–

1. اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ فَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

अल्लाहुम्म बारिक् लहुम् फ़ीमा र–ज़क्तहुम् फग़्फ़िर् लहुम् वर्हम्हुम्॰

2. اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِىْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِىْ (حصن حصین ص۱۱۲)

अल्लाहुम्म अत्अिम् मन् अत्–अ–मनी वस्क़ि मन सक़ानी॰ (हिस्ने हिसीन स. 112)

जिमाअ् की दुआ

हुज़ूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है अगर कोई मुसलमान अपनी बीवी से सोहबत करने से पहले यह पढ़ ले तो उस सोहबत से जो औलाद पैदा होगी उसको कभी हरगिज़ शैतान कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا۔ (بخاری ج۲ ص۹۴۵)

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निब्–नश्शैता–न व जन्निबिश्शैता–न मा रज़क्–तना॰ (बुख़ारी जि. 2 स. 945)

छींक आये तो क्या कहे?

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया। जब तुम में कोई छींके तो चाहिए कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अल्हम्दु लिल्लाह कहे और उसका दोस्त या भाई जो सुने वह

यर्–हमु–कल्लाहु يَرْحَمُكَ اللهُ कहे। फिर इसके जवाब में छींकने वाला يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बा–लकुम्॰ इस हदीस् को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया।

(मिश्कात स. 405 बाबुल अतास)

छींक के वक़्त की दुआयें

हदीस् शरीफ़ में है जो शख़्स छींक आने के वक़्त कहे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَالٍ

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमी–न अला कुल्लि हालिन्॰ उसको कभी भी दाढ़ और कान का दर्द नहीं होगा।

(हिस्ने हिसीन स. 163)

मुर्ग़ की आवाज़ सुन कर दुआ

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रावी हैं कि हु.जूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया, जब तुम लोग मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआला से उसके फ़ज़्ल का

सवाल करो, क्योंकि मुर्ग़ फ़रिश्ता को देख कर बोलता है, यानी यह दुआ पढ़ो–

اَسْئَلُ اللهَ مِنْ فَضْلِهِ الْعَظِيْمِ (مسلم جلد ۲ ص ۳۵۱)

अस्–अलुल्ला–हमिन् फ़द्लिहिल् अज़ीमि॰

या यह पढ़े। اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मिन् फ़द्लि–क॰

(मुस्लिम जि. 2 स. 351)

कुत्ते या गधे की आवाज़ सुने तो क्या पढ़े?

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हु.जूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि गधे की आवाज़ सुनकर शैतान से अल्लाह तआला की पनाह माँगो यानी–

اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ پڑھو (مسلم ج ۲ ص ۳۵۱)

अऊ.जुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम॰ पढ़ो।

(मुस्लिम जि. 2 स. 351)

और कुत्ते को भोंकता हुआ देखे तो भी यही पढ़े।

(हिस्ने हिसीन स. 160)

बेचैनी के वक़्त की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हु.जूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई बेचैनी और परेशानी लाहिक़ हुआ करती तो उस वक़्त दुआ का विर्द फ़रमाते थे–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْحَكِيْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

(ترمذی ج۲ صفحہ ۱۸۱ رشیدیہ)

ला इला–ह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् हकीमु ला इला–ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अर्शिल् अज़ीम॰ ला इला–ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति वलअर्दि व रब्बुल् अर्शिल् करीम॰ (तिर्मिज़ी जि. 2 स. 181 रशीदिया)

मुसीबतज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ

हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बला में मुबतला होने वाले को देखे (बीमार या मुसीबतज़दा को) तो यह दुआ पढ़ ले, तो तमाम उम्र वह उस बला (बीमारी या मुसीबत) से बचा रहेगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

(ترمذی جلد۲ صفحہ۱۸۱)

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्–तला–क बिही व फ़द्द्–लनी अला कसीरिम्–मिम्मन् ख़–ल–क़ तफ़्दीला॰ (तिर्मिज़ी जि.2 स.181)

घर से निकलते वक़्त की दुआ

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़ ले तो

उसकी मुश्किलात दूर हो जायेंगी, और वह दुश्मनों के श से महफ़ूज़ रहेगा और शैतान उससे अलग हो जाएगा।

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَ
لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ترمذی جلد ۲ صفحہ ۱۸۰)

बिस्मिल्लाहि त–वक्कल्–तु अ़लल्लाहि व ला हौ–ल व ला .कुव्व–त: इल्ला बिल्लाहि॰ (तिर्मिज़ी 2/180)

घर में दाख़िल हो तो क्या पढ़े?

घर में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ़ पढ़ लेनी चाहिए

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ
بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى
اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क ख़ैरल्–मौलिजि व ख़ैरल्–मख़्–रजि॰ बिस्मिल्लाहि व लज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अ़लल्लाहि रब्बिना त–वक्कल्ना॰

ह़दीस शरीफ़ में आया है जब कोई शख़्स घर में दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करता है तो शैतान (अपनी औलाद से) कहता है न तुम्हारे लिए यहाँ (रात गुज़ारने का) ठिकाना है और न ही रात का खाना, और जब आदमी घर में दाख़िल होते वक़्त अल्लाह तआ़ला को याद न करे तो शैतान अपने साथियों से कहता है तुम्हें रात का ठिकाना मिल गया और जब खाना खाते वक़्त अल्लाह का ज़िक्र न करे तो शैतान कहता है तुम्हें रात का ठिकाना और खाना दोनों मिल गया। (ह़िस्ने ह़सीन स. 55)

बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़

इरशादे नबवी है कि जो शख़्स बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त इन कलिमात को पढ़ ले तो ख़ुदावन्दे तआ़ला दस लाख नेकियाँ उसके नामए अ़अ्माल में लिखने का हुक्म फ़रमाएगा और उसके दस लाख गुनाहों को मिटा देगा। और दस लाख दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा और जन्नत में उसके लिए एक महल बनाएगा।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ
حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۔ (ترمذی ج ۲ ص ۱۸۰ و حصن حصین ص ۱۶۹)

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल्–हम्दु युह्यी व युमीतु व हुव हय्युल्–ला यमूतु बि–यदिहिल् ख़ैरु व हुव अला कुल्लि शैइन् क़दीर। (तिर्मिजी जि. 2 स. 180 हिस्ने हिसीन स. 169)

सफ़र की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सरजिस रदियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हु.जूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफ़र के लिए रवाना होते तो यह दुआ पढ़ते थे–

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي
الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنَا فِيْ سَفَرِنَا وَاخْلُفْنَا

فِيْ اَهْلِنَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ
السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَمِنَ الْحَوْرِ بَعْدَ
الْكَوْرِ وَمِنْ دَعْوَةِ الْمَظْلُوْمِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ
فِي الْاَهْلِ وَالْمَالِ ۔ (ترمذی، جلد ۲ ص ۱۸۱)

अल्लाहुम्म अन्–तस्साहिबु फ़िस्–स–फ़रि वल् ख़ली–फ़तुः फ़िल् अह्लि अल्लाहुम्–मस्–हब्ना फ़ी स–फ़रिना वख़्लुफ़्ना फ़ी अह्लिना अल्लाहुम्–म इन्नी अऊज़ुबि–क मिंव्–वअ्साइस्–स–फ़रि व का–बतिल् मुन्क़–ल–बि व मिनल्–हौरि बअ्दल् कौरि व मिन् दअ्वतिल् मज़लूमि व सूइल् मन्ज़रि फ़िल् अह्लि वल्मालि। (तिर्मिज़ी जि. 2 स. 181)

सवारी की दुआ

जब जानवर (या किसी सवारी) पर बैठे तो यह दुआ पढ़ ले। इन्शाअल्लाह हादसात से महफ़ूज़ रहेगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَ اِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

अल्ह़म्दु लिल्लाहि सुब्ह़ानल्लज़ी सख़्ख़–र–लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनी–न व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून॰

फिर यह कलिमात पढ़े–

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अल्ह़म्दु लिल्लाह तीन बार

اَللّٰهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अक्बर

तीन बार और एक बार

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ اِنَّهٗ
لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ ۔(حصن حصین ص ۱۲۴)

ला इला–ह इल्लल्लाहु सुब्ह़ा–न–क इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर्ली इन्नहू ला यग़्फ़ि–रुज़्ज़ुनू–ब इल्ला अन्–त॰

(हिस्ने हिसीन स. 124)

बह़री सवारी की दुआ

जब कोई दरिया में सफ़र करे तो कश्ती या जहाज़ पर सवार होकर यह आयत पढ़े तो ग़र्क़ से मह़फ़ूज़ रहे।

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ

बिस्मिल्लाहि मज्रीहा व मुर्साहा इन्न रब्बी लग़.फूरुर्रह़ीम॰

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ

व मा क़द्रुल्ला–ह ह़क़्–क़ क़द्रिही॰

وَالْاَرْضُ جَمِیْعًا قَبْضَتُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ
السَّمٰوٰتُ مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ ۔ (حصن حصین ص ۱۲۷)

वल् अर्ज़ु जमीअ़न् क़ब्ज़तुहू यौमल्क़िया–मति वस्समावाति मत़्विय्यातुम् बि–यमीनिही॰

(हिस्ने हिसीन स. 127)

किसी को रुख़सत करने की दुआ

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी इन्सान को रुख़सत फ़रमाते तो यह कलिमात ज़बाने मुबारक से इरशाद फ़रमाते थे–

أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِيْنَكَ وَأَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ۔ (ترمذی ج ۲ ص ۱۸۲)

अस्तौदि.अुल्ला–ह दी–न–क व अमा–न–त–क व ख़वाती–म अ–मलि–क॰ (तिर्मिज़ी जि. 2 स. 182)

सफ़र से आने की दुआ

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफ़र से लौट कर अपने काशानए नुबुव्वत पर तशरीफ़ लाते तो यह दुआ पढ़ते थे–

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ (ترمذی ج ۲ ص ۱۸۲)

आइबू–न ताइबू–न आबिदू–न लि–रब्बिना हामिदून॰ (तिर्मिज़ी जि. 2 स. 182)

मन्ज़िल पर पढ़ने की दुआ

रहमतुल लिलआलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि जो शख़्स सफ़र मे किसी जगह पड़ाव करे और यह दुआ पढ़ ले तो उसको उस जगह किसी क़िस्म का नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (ترمذی ج ۲ ص ۱۸۱)

अऊज़ु बि–कलिमातिल्लाहित्–ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़–ल–क़॰ (तिर्मिज़ी जि. 2 स. 181)

क़र्ज़ अदा होने की दुआयें

1. मशहूर सहाबी हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन मस्जिद में तशरीफ़ ले गए, तो आप ने वहाँ हज़रत अबू उमामा अन्सारी रदियल्लाहु अन्हु को देखा। आपने फ़रमाया ऐ अबू उमामा तुम उस वक़्त में जब कि नमाज़ का वक़्त नहीं है

मस्जिद में क्यों और कैसे बैठे हुए हो?हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मैं बहुत से अफ़कार और क़र्ज़ों के बार से ज़ेर बार हो रहा हूँ इरशाद फ़रमाया कि क्या मैं तुम को एक ऐसा कलाम न तालीम करूँ कि जब तुम इसको पढ़ो तो अल्लाह तआला तुम्हारी फ़िक्र को दफ़ा फ़रमा दे और तुम्हारे क़र्ज़ को अदा कर दे। हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि क्यों नहीं या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ज़रूर मुझे तालीम फ़रमाइये। तो आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम रोज़ाना सुबह व शाम यह दुआ पढ़ लिया करो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَ
اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسْلِ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ
غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि–क मि–नल्हम्मि वल्. हुज़्नि व अऊज़ुबि–क मिनल् अिज्ज़ि वल्कस्लि व अऊ.जु बि–क मिनल्जुब्नि वल्बुख़्लि व अऊ.जु बि–क मिन् ग़–ल–बतिद्–दैनि व क़हरिर् रिजालि॰

हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने इस दुआ को पढ़ा तो मेरी फ़िक्र जाती रही और ख़ुदावन्दे तआला ने मेरे क़र्ज़ भी अदा फ़रमा दिये।(अबू दाऊद जि. 1 स. 217 आख़िर किताबुस्सलात)

2. या यह दुआ पढ़े–

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ
بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्मक्फ़िनी बि–हलालि–क अन् हरामि–क व अग़्निनी बि–फ़द्लि–क अम्मन् सिवा–क॰

हज़रत मौलाए कायनात अली मुर्तज़ा रदियल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि इसके पढ़ने से अगर बड़े पहाड़ बराबर भी क़र्ज़ रहेगा तो अदा हो जाएगा।

(मिश्कात स. 216 तिर्मिज़ी स. 195)

आँधी के वक़्त की दुआ

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आँधी चलती तो यह दुआ पढ़ते थे–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِهَا وَخَیْرِ مَا فِیْهَا وَخَیْرِ مَآ اُرْسِلَتْ بِهٖ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا وَشَرِّ مَآ اُرْسِلَتْ بِهٖ (ترمذی ج۲ ص۱۸۳)

अल्लाहुम्–म इन्नी अस्–अलु–क मिन् ख़ैरिहा व ख़ैरि मा फ़ीहा व ख़ैरि मा उर्सि–लत् बिही व अऊज़ु बि–क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा उर्सि–लत् बिही।

(तिर्मिज़ी जि. 2 स. 183)

हर बला से नजात के लिए

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह व शाम तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े तो उसको दुनिया की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचाएगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

(ترمذی ج۲ ص۱۷۳ باب ما جاء فی الدعاء اذا اصبح واذا امسیٰ)

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यदुर्रु मअस्मिही शय्उन् फ़िल्–अर्दि व ला फ़िस्समाअि व हुवस्समी.अुल् अलीम।

(तिर्मिज़ी जि.स. 173 बाब माजा फ़िदुआ इज़ा अस्बह व इज़ा अमसा)

शिफ़ाए अमराज़ के लिए

रिवायत है कि अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब और साबित बनानी रदियल्लाहु अन्हुमा दोनों हज़रात अनस सहाबी रदियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और साबित बनानी ने अर्ज़ किया कि ऐ अबू हमज़ा (अनस) मैं बीमार हो गया हूँ हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क्या मैं इस दुआ से तुम्हारे मर्ज़ का झाड़ फूँक न कर दूँ जिस दुआ से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मरीज़ों पर शिफ़ा के लिए दम फ़रमाया करते थे, साबित

बनानी ने कहा कि क्यों नहीं। इसके बाद ह़ज़रत अनस रद़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह दुआ़ पढ़ी–

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ مُذْهِبَ الْبَاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ، لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ شِفَاءً لَّا يُغَادِرُ سُقْمًا۔ (بخاری ج ۲ ص۸۵۵ باب رقیۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم)

अल्लाहुम्म रब्बन्नासि मुज़्हि–बल्बासि इश्फ़ि अन्–तश्शाफ़ी। ला शाफ़ि–य इल्ला अन्–त शिफ़ाअन्–ला युग़ादिरु सुक़्मा। (बुख़ारी जि.2 स. 855 बाब रक़िय्यतुन्नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

हर मर्ज़ का इलाज

1. हुज़ूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सूरह फ़ातिह़ा अ़सल .क़ुरआन, हर मर्ज़ का इलाज है। (दुर्रे मन्सूर जि. 1 स. 5)

2. ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रद़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि सूरह फ़ातिह़ा सिवाए मौत हर चीज़ का इलाज है। (दूतक़ान जि. 2 स. 63)

मुस़ीबत पर निअ़्मुल बदल मिलने की दुआ़

ह़ज़रत उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि मैंने हु.ज़ूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह सुना था कि किसी मुसलमान को कोई मुस़ीबत पहुँचे तो वह–

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ۔ اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاَخْلِفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम्म जुर्नी फ़ी मुस़ी–बती व अख़्लिफ़् ली ख़ैरम् मिन्हा।

पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उस मुसलमान को उसकी ज़ाया शुदा चीज़ से बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमाएगा।

ह़ज़रत बीबी उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब मेरे शौहर ह़ज़रत अबू सलमा रद़ियल्लाहु अ़न्हु का इन्तेक़ाल हो गया तो मैंने दिल में कहा कि भला अबू

सलमा से बेहतर कौन मुसलमान होगा। यह पहला घर है जो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वस़ल्लम के पास मक्का से हिजरत करके मदीना पहुँचा। लेकिन मैंने इस दुआ़ को पढ़ लिया तो अल्लाह तआ़ला ने मुझे अबू सलमा से बेहतर शौहर अ़ता फ़रमाया कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझ से निकाह़ फ़रमा लिया।

(मुस्लिम जि. 1 स. 300 किताबुल जनाइज़)

किसी क़ौम से डरे तो क्या पढ़े?

हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर किसी क़ौम या किसी लश्कर से जान व माल वग़ैरह का ख़ौफ़ हो तो यह दुआ़ पढ़े–

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ (ابوداؤد ج ۱ ص ۲۱۵ رشیدیہ)

अल्लाहुम्–म इन्ना नज्–अ़लु–क फ़ी नु.हूरिहिम् व नऊ.जुबि–क मिन् शुरूरिहिम्。 (अबू दाऊद 1/215)

जन्नत का ख़ज़ाना

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस रदि़यल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि मुझ से हु.ज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या मैं तेरी रहनुमाई ऐसे कलिमा पर न करूँ जो जन्नत के ख़ज़ानों में से है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वह कौनसा कलिमा है तो इरशाद फ़रमाया कि वह कलिमा لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ला हौ–ल व ला .कुव्व–त इल्ला बिल्लाह。 है।

(मुस्लिम जि. 2 स. 346 अस़हुल मत़ाबे)

जब .गुस्सा आये तो क्या पढ़े?

हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम् ने फ़रमाया जो .गुस्सा के वक़्त–

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम。 पढ़ ले उसका गुस्सा चला जाएगा। (तिर्मिज़ी जि. 2स. 183)

सलातुल हाजत

जिसे कोई हाजत पेश आये तो चाहिए कि अच्छी तरह वु.जू करे और दो रकअ़त (नमाज़े हाजत) पढ़े, फिर (सलाम) के बाद इस तरह दुआ करे–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ
مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّيْ
اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّيْ فِيْ حَاجَتِيْ هٰذِهٖ
لِتُقْضٰى لِيْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क व अ–त–वज्जहु इलै–क बि–नबिय्यि–क मुहम्मदिन् नबिय्यिर्रह़–मति या मुहम्मदु इन्नी अ–त–वज्जहु बि–क इला रब्बी फ़ी हा–जती हाज़िही लि–तक़्दि–य ली अल्लाहुम्म फ़–शफ़्फ़िअ़्हु फ़ी–य॰

उ़स्मान बिन हुनैफ़ रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि एक नाबीना शख़्स हुजूर के पास आया और अ़र्ज़ किया

कि हु.जूर दुआ फ़रमायें कि अल्लाह तआ़ला मुझे शिफ़ा दे तो हु.जूर ने उसको अच्छी त़रह़ वुज़ू करने, दो रकअ़त नमाज़ पढ़ने और फिर मज़कूरा दुआ माँगने का हुक्म दिया उसने ऐसा ही किया फिर जब उठा तो उसकी आँख बीना हो चुकी थी।

(तिर्मिज़ी, निसई, इब्ने माजा, हाकिम, हिस्ने हिसीन बाब सलातुल हाजत, स. 151 ,इमाम बैहक़ी ने इस ह़दीस़ को सही फरमाया है। हाशीयए हिस्न)

अल्लाह के बन्दों से मदद त़लब करना

अगर किसी आदमी की कोई सवारी गुम होजाये (या खुद गुम हो जाये) और ऐसी जगह पर हो कि वहाँ कोई साथी और हमदर्द नहीं तो हुजूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ऐसे मौक़ा पर इस त़रीक़े से अल्लाह के बन्दों को पुकारे।

يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِيْنُوْنِيْ يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِيْنُوْنِيْ
يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِيْنُوْنِيْ۔ (طبرانی، مصنف ابن ابی شیبہ حصن حصین ص۱۲۶)

या अ़िबा–दल्लाहि अओ़नूनी या अ़िबा–दल्लाहि अओ़नूनी या अ़िबा–दल्लाहि अओ़नूनी॰
(तिबरानी, मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा, हि़स्ने हि़सीन स. 127)

स़ाहिबे हि़स्ने हि़सीन अ़ल्लामा मुहम्मद जज़री अ़लैहिर्रह़मा फ़रमाते हैं कि यह अ़मल मुजर्रब है।

दर्द दूर होने की दुआ़यें

1. ह़ज़रत उ़समान बिन अबिलआ़स रदि़यल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि मुझे दर्द था और ऐसा कि हलाकत के क़रीब पहुँचा दिया था तो रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आया हु.जूर ने फ़रमाया। दर्द की जगह दाहिना हाथ रख कर सात मर्तबा मलो और कहो–

أَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ

अऊ़जु बि–अ़िज़्ज़तिल्लाहि व .कुद्–रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु॰ तो मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआ़ला ने मेरा दर्द दूर फ़रमा दिया फिर मैं बराबर इसी का अपने घर वालों और दूसरों को हुक्म देता हूँ।

(अबू दाऊद जि.2/543 मतबूआ़ रशीदिया)

2. ह़ज़रत आ़इश सि़द्दीक़ा रदि़यल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ होती तो मुअ़व्वज़ात (यानी सूरह इख़्लास़ व फ़लक़ व नास) पढ़ कर अपने ऊपर दम किया करते। फिर जब हु.जूर की तकलीफ़ बढ़ जाती मैं भी आप पर पढ़ कर दम करती और आप पर आपके हाथ फेरती इसकी बरकत की उम्मीद पर। (अबू दाऊद जि. 2 स. 545)

इफ़्तार की दुआ़

1. हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब इफ़्तार फ़रमाते तो पढ़ते–

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ

अल्लाहुम्म ल–क सुम्तु व अ़ला रिज़्क़ि–क अफ़्तर्तु॰

(अबू दाऊद जि. 1 स. 322)

2. ذَهَبَ الظَّمَاءُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَآءَ اللهُ تَعَالٰى أَيْضًا

ज़–ह–बज़्ज़मउ वब्–तल्लतिल्–.अुरू.कु सब्–तल्–अज्रु इन्शाअल्लाहु तआ़ला। (ऐज़न 321)

बीमार की दुआ

हज़रत अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तुम में से जो बीमार हो तो चाहिए कि यह दुआ पढ़े बेइज़्निल्लाह वह शिफ़ा पाएगा।

رَبُّنَا اللّٰهُ الَّذِیْ فِی السَّمَاءِ تَقَدَّسَ اسْمُكَ اَمْرُكَ فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ كَمَا رَحْمَتُكَ فِی السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِی الْاَرْضِ فَاغْفِرْ حُوْبَنَا اَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِيْنَ اَنْزِلْ رَحْمَةً مِّنْ رَّحْمَتِكَ وَشِفَاءً مِّنْ شِفَاءِكَ عَلٰى هٰذَا الْوَجَعِ (شرح سفر السعادة ص۳۸۰، مکتبہ رضویہ سکھر)

रब्बुनल्लाहुल्लज़ी फ़िस्समाअि तक़द्–द–सस्मु–क अम्रु–क फ़िस्समाइ वलअर्दि कमा रह़्म–तु–क फ़िस्समाइ फ़ज्अल् रह़्म–त–क फ़िलअर्दि फ़ग़्फ़िर् हू–बना अन्–त रब्बुत्–तय्यिबी–न अन्ज़िल् रह़्म–तम्–मिर्–रह़्मति–क व शिफ़ाअम् मिन् शिफ़ाइ–क अ़ला हाज़ल्–व–जअि।

(शरह सफ़रुस्सआ़दत स. 480)

नया कपड़ा पहनने की दुआ

जब नया कपड़ा पहने तो यह दुआ पढ़े–

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَيَاتِیْ (ترمذی ۲/۱۹۵)

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्–लज़ी कसानी मा उवारी बिही औ़–रती व अ–त–ज़म्मलु बिही फ़ी ह़याती।

(तिर्मिज़ी 2/195)

और जब कपड़े उतारे ता بِسْمِ اللّٰهِ बिस्मिल्लाहि पढ़े। यह उसके जिस्म और जिन्नों के दर्मियान पर्दा हो जाता है।

(ह़िस्ने ह़सीन स. 114)

बादल गरजने पर पढ़ने की दुआ

हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बादल की गरज और बिजली की कड़क के वक़्त यह फ़रमाते–

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَالِكَ (ترمذی ۲/۱۸۲)

अल्लाहुम्म ला तक़्तुल्ना बि–ग़–द़बि–क व ला तुह्लिक्ना बि–अ़ज़ाबि–क व आ़फ़िना क़ब्ल ज़ालि–क

(तिर्मिज़ी 2/182)

जब बारिश हो तो पढ़े

जब बारिश देखे तो दो या तीन बार पढ़े–

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا

अल्लाहुम्म स़य्यिबन् नाफ़िअ़न्

जब बारिश न हो तो पढ़े

जब बारिश न हो और क़हत में लोग मुब्तला हों तो यह दुआयें पढ़ी जायें।

يَارَبِّ يَارَبِّ ○ اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا ○ اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا (حصن حصین ص۱۵۵)

या रब्बि या रब्बि॰ अल्लाहुम्म अस्क़िना अल्लाहुम्म अस्क़िना अल्लाहुम्म अस्क़िना॰ अल्लाहुम्म अग़िस्ना अल्लाहुम्म अग़िस्ना अल्लाहुम्म अग़िस्ना॰

(ह़िस्ने हिस़ीन स.155)

नया चाँद देख कर पढ़े

नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब नया चाँद देखते तो यह दुआ़ माँगते–

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ (ترمذی ص۱۸۳ ج۲۔ حصن حصین ص۱۶۰)

अल्लाहुम्म अहिल्लहू अ़लैना बिल्युम्नि वल्ईमानि वस्सला–मतिः वल्इस्लामि वत्तौफ़ीक़ि लिमा तुहि़ब्बु व तर्दा रब्बी व रब्बुकल्लाहु॰

(तिर्मिज़ी जि. 2 स. 183 ह़िस्ने ह़िसीन स. 160)

शबे क़द्र की दुआ़

ह़ज़रत आइशा रदि़यल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर शबे क़द्र मुझे मालूम हो जाये तो मैं उस में क्या दुआ़ करूँ ? हु.ज़ूर ने फ़रमाया कहो–

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ (ترمذی ص۱۹۰)

अल्लाहुम्म इन्न–क अ़.फ़ुव्वुन् तुहि़ब्बुल्–अ़फ़्व फ़अ़्.फ़ु अ़न्नी॰

(तिर्मिज़ी जि. 2 स. 190)

नींद में डरने की दुआ़ और तावीज़

रसूले अनवर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया– जब तुम में का कोई आदमी नींद में डरे तो यह दुआ़ पढ़ले–

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَ عِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنَ.

अऊ.जु बि–कलिमातिल्लाहित्–ताम्माति मिन् ग़द्बिही व अ़िक़ाबिही व शर्रि अ़िबादिही व मिन् ह–म–ज़ातिश्–शयात़ीनि व अंय्यह्दुरून॰

इसको पढ़ लेने के बाद उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा। और ह़ज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़म्र रदि़यल्लाहु अ़न्हुमा इस दुआ़ को अपने बालिग़ बच्चों को सिखाते थे, और इसको किसी काग़ज़ वग़ैरह पर लिख कर अपने नाबालिग़ बच्चों के गले में लटकाते थे। इस ह़दीस़ को इमाम अबू दाऊद और इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया।

(मिश्कात स. 217 बाबुल इस्तिआ़ज़ा)

बैतुल ख़ुला जाते वक़्त की दुआ़

नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब बैतुल ख़ुला जाते (यानी इरादा करते) तो بِسْمِ اللّٰهِ बिस्मिल्लाह पढ़ कर यह कहते–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जुबि–क मिनल् ख़ुबसि वल्–ख़बाइसि।

(सही बुख़ारी किताबुद्दावात जि. 2 स. 936 व हिस्ने हिसीन स. 67) और जब निकलते तो कहते–

غُفْرَانَكَ गुफ़रा–न–क। (तिर्मिज़ी 1/3) और कहते–

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्–ह–ब अन्निल अज़ा व आफ़ानी।

(हिस्ने हिसीन स. 68)

जब आईना देखे

जब अपने चेहरे को आईना में देखे, तो यह पढ़े–

اَللّٰهُمَّ كَمَا حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ وَحَرِّمْ وَجْهِیْ عَلَی النَّارِ (حصن حصین ۱۶)

अल्लाहुम्म कमा हस्सन्–त ख़ल्क़ी फ़–अह्सिन् ख़ुलुक़ी व हर्रिम् व जही अलन्नारि। (हिस्ने हिसीन स. 61)

आबे ज़मज़म पीने की दुआ

जब अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ज़मज़म पीते तो यह दुआ माँगते–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ۔

अल्लाहम्म इन्नी अस्–अलु–क अिल्मन्–नाफ़िअंव् व रिज़्क़ंव् वासि–अंव्–व शिफ़ाअम् मिन् कुल्लि दाअिन्।

मरीज़ की अयादत के वक़्त

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी मरीज़ की अयादत को तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते–

لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ (مشکوٰۃ ص ۱۳۴)

ला बा–स तहूरुन् इन्शाअल्लाह। दो बार कहे।

(मिश्कात स. 134)

2. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो मुसलमान किसी मुसलमान की अयादत

करे और उसके पास सात मर्तबा यह कलिमात कहे
अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसको शिफ़ा अ़ता फ़रमाए मग
यह कि मौत आ गई हो, वह कलिमात यह हैं—

اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
اَنْ يَّشْفِيَكَ (مشکوٰۃ ص ۱۳۵)

अस्–अलुल्लाहल्–अ़ज़ी–म रब्बल्–अ़र्शि
अ़ज़ीमि अंय्यशफ़िय–क॰ (मिश्कात स. 135)

या यह पढ़े حَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ اِشْفِ فُلَانًا

या ह़लीमु या करीमु इश्फ़ .फ़ुलाना॰ फ़लाँ की जगह
मरीज़ का नाम ले। (ह़िस्न स. 147)

कुफ़्फ़ार पर दुआ़ करना

रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार
की अफ़वाज के ख़िलाफ़ इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई।

اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ
اَهْزِمِ الْاَحْزَابَ اَهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ (بخاری ج۲ ص ۹۴۶)

अल्लाहुम्म मुन्ज़िलल् किताबि सरीअ़ल् ह़िसाबि
अह्ज़िमिल् अह़्ज़ा–ब अह्ज़िमहुम् व ज़ल्ज़िलहुम्॰
(बुख़ारी जि. 2 स. 946)

जामेअ़् दुआ़

ह़ज़रत अबू उमामा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी
कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बहुत सी
दुआ़यें माँगी, हमें उन में से कुछ भी याद नहीं रहीं। हमने
रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया
आपने बहुत सी दुआ़यें फ़रमाईं हमें उन में से कुछ भी याद
नहीं। रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने
फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें वह दुआ़ न बता दूँ जो उन सब की
जामेअ़ है, तुम यूँ दुआ़ करो—

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ
نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُبِكَ
مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ

الْبَلَاءِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

अल्लाहुम्म इन्ना नस्–अलु–क मिन् ख़ैरि मा स–अ–ल–क मिन्हु नबिय्यु–क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल–म व नऊ.जुबि–क मिन् शर्रि मस्तआ–ज मिन्हु नबिय्यु–क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल–म व अन्–तल् मुस्तआनु व अलै–कल्–बला.गु व ला हौ–ल व ला .कुव्व–तः इल्ला बिल्लाहि॰

(तिर्मिज़ी 2/190)

अगर किसी का वज़ीफ़ा छूट जाये

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया– जो आदमी अपना पूरा या कुछ वज़ीफ़ा छोड़ कर सो जाये तो नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े जुहर के दर्मियान अगर पढ़ ले तो उसका वही स़वाब लिखा जाएगा गोया उसने रात ही को पढ़ा हो।

(तिर्मिज़ी जि. 1 स. 75)

सुबह व शाम की दुआयें

1. रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स सुबह व शाम, सौ सौ बार कहे سُبْحَانَ اللهِ सुब्हानल्लाहि गोया उसने सौ हज किया और जो सुबह व शाम सौ मर्तबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अल्हम्दु लिल्लाहि कहे गोया उसने ख़ुदा के रास्ते में सौ घोड़े की सवारी कराई या फ़रमाया। गोया उसने सौ ग़ज़वा (जंग) किया।और जो सुबह व शाम सौ मर्तबा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ ला इला–ह इल्लल्लाहु कहे तो वह गोया ऐसा है कि हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के ख़ानदान से सौ . गुलाम आज़ाद किये। और जिसने सुबह व शाम सौ बार اَللهُ اَكْبَرُ अल्लाहु अक्बर कहा तो उससे बेहतर किसी का अमल नहीं। मगर इसका जो यह कलिमा या इसके मिस्ल कहे या इससे ज़ाइद। (तिर्मिज़ी 2/185)

2. जब शाम होती तो हु.जूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ फ़रमाते–

اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَعَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ـــــ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرِ مَافِيْهَا وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَافِيْهَا ـــــ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَسُوْءِ الْكِبَرِ وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ

अम्सैना व अम्सल् मु–लकु लिल्लाहि वल्ह़म्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू लहुल्–मुल्कु व लहुल्ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीर॰ अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मिन् ख़ैरि हाज़िहिल्–लै–लति व ख़ैरि मा फ़ीहा व अऊ.जु बि–क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा॰ अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जु बि–क मि–नल् कस्लि वल्–ह–रमि व सूअिल् कि–बरि व फ़ित्–नतिद्–दुन्या व अ़ज़ाबिल् क़ब्रि॰

और जब सुबह होती तो इसी दुआ़ को यूं पढ़ते–

اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَعَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ـ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذَا الْيَوْمِ وَخَيْرِ مَافِيْهِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَافِيْهِ ـــــ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَسُوْءِ الْكِبَرِ وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ (مشکوٰۃ ص۲۰۸)

अस्बह्ना व अस्ब–ह़ल्मुल्कु लिल्लाहि वल्ह़म्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीर॰ अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु–क मिन् ख़ैरि हाज़ल् यौमि व ख़ैरि मा फ़ीहि॰ अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जु बि–क

मिनल्–कस्लि वल्ह–र–मि व सूअिल् कि–बरि व फित्–नतिद्–दुन्या व अज़ाबिल् कब्रि॰ (मिश्कात स. 208)

मुख़्तलिफ़ दुआयें

जिनके औक़ात मुतअय्यन नहीं

ज़ैल में वह चन्द मस्नून दुआयें तहरीर की जाती हैं जो किसी वक़्त के साथ ख़ास नहीं, चाहिए कि हस्बे तौफ़ीक़ इनको ज़्यादा से ज़्यादा विर्द में रखा जाये कि ईमान ताज़ा होगा। रूह में बालीदगी पैदा होगी। दीन व दुनिया के मक़ासिद बर आयेंगे। ख़ुदा की हिफ़ाज़त व सियानत नसीब होगी। फ़रिश्तों की इमदाद व रिफ़ाक़त मयस्सर होगी और सब से बड़ी बात तो यह है कि ज़िक्रे इलाही के तमाम फ़वाइद हासिल होंगे और ख़ुदा राज़ी होगा।

1. سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि व बिहम्दिही॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो इसको पढ़ता है उसके लिए जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाता है। और हु.जूर ने फ़रमाया जो इसको सौ बार कहे उसके तमाम सग़ीरा गुनाह माफ़ हों अगरचे समुन्द्र के झाग के बराबर हों।

2.

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू इलाहंव् वाहिदन् अ–ह–दन् स–म–दल्–लम् यत्तख़िज़् साहि–ब–तंव्–व ला व ल–दंव् व लम् यकुंल् लहू कुफ़ुव्वन् अहद॰ हु.जूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिसने इसको दस बार कहा उसके लिए दस करोड़ नेकियाँ लिखी जाती हैं।

3. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ

لَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ-

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क बि–अन्नी अश्–हदु अन्न–क अन्तल्लाहु ला इला–ह इल्ला अन्तल अ–ह़दुस्–स़मदुल्लज़ी लम् यलिद् व लम् यू लद् व लम् यकुंल्–लहू कु.फुव्वन् अ–ह़द्।

हु.जूर ने एक शख़्स़ को यह दुआ पढ़ते सुना तो फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है उस शख़्स़ ने अल्लाह के इस्मे आज़म के ज़रीआ सवाल किया, जिसकी ख़ुसूसियत यह है कि जब उससे दुआ की जाती है तो अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है और जब कि इसके ज़रीआ कुछ माँगा जाता है तो अता फ़रमाता है।

4. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَارْحَمْنِىْ

अल्लाहुम्–मग़्फ़िर्ली वर् ह़म्नी।

.फुज़ाला बिन उ़बैद से मरवी है कि हु.जूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स़ दाख़िल हुआ और नमाज़ पढ़ी फिर नमाज़ के बाद दुआ पढ़ी, तो हु.जूर ने फ़रमाया ऐ नमाज़ी तू ने जल्दी की, जब तू नमाज़ पढ़े तो बैठ कर पहले ख़ुदा की ह़म्द बजा ला ऐसे कलिमात से जिसका वह अहल है और मुझ पर दुरूद पढ़ फिर उससे दुआ कर, फिर इसके बाद एक दूसरे शख़्स़ ने नमाज़ पढ़ी (ग़ालिबन अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदि़यल्लाहु अ़न्हु थे) तो उन्होंने ख़ुदा की ह़म्द की और नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ा तो हु.जूर ने उन से फ़रमायाः ऐ नमाज़ पढ़ने वाले अब दुआ कर क़बूल की जाएगी। (तिर्मिज़ी 2/186) इससे मालूम हुआ कि जब कोई दुआ करनी हो तो पहले ह़म्द व स़लात का विर्द कर ले फिर माँगे ख़ुसूसन नमाज़ के बाद की दुआ में– गोया यूँ कहे–

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ-

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमी–न वस्स़लातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल् मुरसली–न व अ़ला आलिही व स़ह़्बिही अज्मअ़ीन।

और इसके बाद जो दुआ करनी हो करे।

5.

اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ جَسَدِىْ وَعَافِنِىْ
فِىْ بَصَرِىْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी ज–सदी व आफ़िनी फ़ी ब–स़री वज्अल्हुल् वारि–स़् मिन्नी ला इला–ह इल्लल्लाहुल् ह़लीमुल् करीमु सुब्ह़ानल्लाहि रब्बिल् अ़र्शिल् अज़ीमि वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ–लमीन॰

6.

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِىْ رُشْدِىْ وَاَعِذْنِىْ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ

अल्लाहुम्म अल्हिम्नी रुश्दी व अअ़िज़्नी मिन् शर्रि नफ़्सी॰

7. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَسْئَلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى
وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–कल्हुदा वत्तुक़ा वल्अफ़ा–फ़ वल्ग़िना॰

8. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِىْ
وَمِنْ شَرِّ بَصَرِىْ وَمِنْ شَرِّ لِسَانِىْ وَمِنْ شَرِّ
قَلْبِىْ وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّىْ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.ज़ु बि–क मिन् शर्रि सम्ई़ व मिन् शर्रि ब–स़री व मिन् शर्रि लिसानी व मिन् शर्रि क़ल्बी व मिन् शर्रि मनिय्यि॰

9. لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ
مِنَ الظّٰلِمِيْنَ۔

ला इला–ह इल्ला अन्–त सुब्ह़ा–न–क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन॰ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया यह ह़ज़रत .जुन्नून यूनुस अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ है जो आपने मछली के शिकम में फ़रमाई। जो मुसलमान इसके वसीले से दुआ़ करेगा ज़रूर अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाएगा।

10. يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ

या मुक़ल्लि–बल् .कुलूबि स़ब्बित् क़ल्बी अ़ला दीनि–क॰ हु.जूर यह दुआ़ अक्सर फ़रमाया करते।

11. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَضَلْعِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जुबि–क मिनल्–हम्मि वल् . हुज़नि वल् अ़ज्ज़ि वल्कस्लि वल्–बुख़्लि व द़ल्अ़िद्–दैनि व क़ह्रिर्–रिजाल॰

12. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰى وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَمِنْ شَرِّ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.जुबि–क मिन् फ़ित्–नतिन्नारि व अ़ज़ाबिन्नारि व अ़ज़ाबिल् क़ब्रि व मिन् शर्रि फ़ित्–नतिल्ग़िना व मिन् शर्रि फ़ित्नतिल्क़ब्रि व मिन् शर्रिल् मसीह़िद्–दज्जाल॰

13. اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَاىَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَاَنْقِ قَلْبِىْ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا اَنْقَيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِىْ وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

अल्लाहुम्–मग़्सिल् ख़त़ा या–य बिमाअिस्स़ल्जि वल् ब–रदि व अन्क़ि क़ल्बी मिनल्–ख़त़ा या कमा अन्क़ै–तस्सौबल्–अब्–य–द़ मिनद्–द–नसि व

बाअिद् बैनी व बै–न ख़ता या–य कमा बा अत्–त बै–नल्–मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि॰

14. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ ـ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ.ज़ुबि–क मिनल्–कस्लि वल्–ह–रमि वल्मा–स्मि वल्मग़्–रमि॰

(यहां तक की तमाम ह़दीसें तिर्मिज़ी बाबुद्दावात से ली गई हैं।)

15. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّرِزْقًا طَيِّبًا ـ (مشکوٰۃ ٢٢)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क अिल्मन्–नाफ़िअंव् व अ–म–लम्–मु–त–क़ब्ब–लंव् व रिज़्क़न् त़य्यिबा॰

(मिश्कात स. 220)

16. اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ جُهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرْكِ الشِّقَاءِ وَسُوْءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ

अल्लाहुम्म इन्ना नऊ.ज़ुबि–क मिन् जुह्दिल् बलाअि व दर्किश्शिक़ाअि व सूअिल्क़दाअि व शमा–ततिल्–अअ्दाअि॰

17. اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फ़िद्–दुन्या ह़–स–न–तंव् व फ़िल् आख़ि–रति ह़–स–न–तंव् व क़िना अज़ाबन्नार॰

18.

اَللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَا عَلٰى طَاعَتِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ خَطَائِیْ وَعَمْدِیْ

अल्लाहुम्म मु–स़र्रि–फ़ल् .क़ुलूबि स़र्रिफ़् .क़ुलू–बना अ़ला त़ा–अ़ति–क अल्लाहुम्–मग़्फ़िर्ली .ज़ुनूबी ख़ताअी व अ़म्दी॰

(ह़िस्ने ह़िसीन)

आयतुलकुर्सी के फ़ज़ाइल व फ़वाइद

1. आयतुलकुर्सी आयाते .कुरआनी की सरदार है।

(मुस्तदरिक जि.2 स. 260)

2. जो शख़्स सोते वक़्त आयतुलकुर्सी पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उसके घर और उसके आस पास के अहले ख़ाना को अमन अ़ता फ़रमाता है।

(मिरक़ातुल मफ़ातीह़ 2/583)

3. आयतुलकुर्सी जिस घर में पढ़ी जाती है शैतान और दूसरे (मूज़ी) उसके क़रीब नहीं आते।

(तिर्मिज़ी 2/111)

4. जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुलकुर्सी पढ़ता है दूसरी नमाज़ तक अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहता है।

(क.जुल उ़म्माल 1/141)

5. जो हर नमाज़ के बाद आयतुलकुर्सी पढ़ता है मरते ही जन्नत में दाख़िल होता है।

(ऐज़न)

6. जिस खाने और सालन पर आयतलकुर्सी पढ़ी

जाएगी अल्लाह तआ़ला उस में बरकत देगा।

(दुर्रे मन्सूर 1/323)

7. जिस माल या औलाद पर आयतुलकुर्सी रख दोगे यानी दम करोगे या लिख कर रख दोगे या उसका तावीज़ बना कर लटका दोगे शैतान उस माल या औलाद के क़रीब भी नहीं आएगा।

(हिस्ने हिसीन स. 179 बहवालाए तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा, इब्ने हब्बान, मुस्तदरिक हाकिम)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ
سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ
مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ
مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ
بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ
الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ

अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हुवल् हय्युल् कय्यूमु ला ता खु.जुहू सि–न–तुंव्–व ला नौमुन् लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल् अर्दि मन् ज़ल्लज़ी यशफ़.अु अिन्दहू इल्ला बि–इज़्निही यअ़लमु मा बै–न अैदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू–न बि–शैअिम् मिन् अि ल्मिही इल्ला बिमाशा–अ व सि–अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल् अर्–द व ला यऊदुहू हिफ़्.ज़ुहुमा व हुवल् अ़लीय्युल् अ़ज़ीम॰

आमनर्रसूल के फ़ज़ाइल

सूरह बक़रह की आख़िरी दो आयतें

آمَنَ الرَّسُوْلُ وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

आमनर्रसूल से वन्सुरनाअलल्–क़ौमिल्–काफ़िरीन॰ तक जो तीसरे पारे में हैं। इन की अहादीस् में बड़ी फ़ज़ीलत आई है। चाहिए कि इन्हें याद कर लिया जाये और विर्द में रखा जाये। इसके फ़ज़ाइल में जो अहादीस् मरवी हैं उनमें से चन्द का ज़िक्र किया जाता है।

1. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह फ़रमाते हैं जिस शख़्स ने रात में सूरह बक़रह का आखिर पढ़ लिया उसने बहुत पढ़ लिया और उम्दा किया। (दुर्रे मन्सूर 1/378)

2. आप ही से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो किसी शब सूरह बक़रह की आख़िरी दो आयतें पढ़ेगा यह उसे काफ़ी होंगी। (मिश्कात 185 बहवाला बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दाऊद, मुस्नद हमीदी 1/452)

3. हु.ज़ूर ने फ़रमाया: सूरह बक़रह की अख़ीर आयतें मुझे ज़ेरे अर्श के ख़ज़ाने से मिली हैं और मुझ से पहले किसी नबी को न मिलीं। (कन्ज़ुल उम्माल 1/142)

4. एक रिवायत में है, सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेशक अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रह को दो ऐसी आयतों पर ख़त्म फ़रमाया जो मुझे अ़र्श के ख़ज़ाने से मिली हैं तो तुम इन आयात को हासिल करो और अपनी औरतों और बच्चों को सिखाओ इस लिए कि यह सलात और .क़ुरआन और दुआ़ है। (हिस्ने हिसीन स. 214)

फ़ज़ाइले सूरह कहफ़ शरीफ़

सूरह कहफ़ शरीफ़ जो .कुरआने करीम के पन्द्रहवें और सोलहवें पारे में है इसकी भी ह़दीस शरीफ़ में बड़ी फ़ज़ीलत आई है। चाहिए कि इसको विर्द में रखा जाये और ख़ास़ तौर से जुमा को पढ़ना बड़ी अहमियत का ह़ामिल है। ज़ैल में इसके कुछ फ़ज़ाइल बयान किये जाते हैं।

1. ह़ज़रत अबू दरदा रद़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी, रसूले ख़ुदा स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस शख़्स़ ने सूरह कहफ़ की इब्तेदाई दस आयतें ह़िफ़्ज़ कर लीं वह दज्जाल के फ़ितने से मह.फ़ूज़ होगा। (मुस्लिम 1/271, मिश्कात 185)

2. आप ही से यह रिवायत भी है कि जो शख़्स़ कहफ़ की इब्तेदाई तीन आयतें पढ़ ले वह दज्जाल के फ़ितना से मह.फ़ूज़ रहेगा। (तिर्मिज़ी 2/112, मिश्कात 187)

3. ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

फ़रमाया। सूरह कहफ़ का नाम 'ह़ाइला' है। यह सूरह अपने तिलावत करने वाले और जहन्नम के दर्मियान ह़ाइल हो जाएगी। (कंज़ुल उ़म्माल 1/143)

4. ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है कि जो जुमा के दिन सूरह कहफ़ पढ़ता है। जहाँ वह पढ़ता है वहाँ से ख़ाना कअ़्बा तक की मुसाफ़त को नूर रौशन कर देता है। (कंजुल उम्माल 1/143)

5. एक रिवायत में है कि जुमा के रोज़ सूरह कहफ़ की तिलावत दूसरे जुमा तक के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाती है। (दुर्रे मन्सूर 4/206)

6. हु.जूर ने फ़रमायाः जिस घर में सूरह कहफ़ पढ़ी जाती है उसमें रात को शैत़ान दाख़िल नहीं होता। (कंजुल उम्माल 1/143)

फ़ज़ाइले सूरह यासीन शरीफ़

1. हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से मरवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हर चीज़ का एक दिल होता है यासीन कुरआन का दिल है उसके लिए उस पढ़ने के एवज़ दस बार .कुरआन पढ़ने का सवाब लिखा जाएगा। (तिर्मिज़ी 2/112, मिश्कात 187)

2. हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुरआन का दिल यासीन है। अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर जो सूरह यासीन पढ़ेगा उसकी मग़फ़िरत हो जाएगी। तुम अपने मुर्दों के पास इसको पढ़ा करो। (तरग़ीब 2/636)

यानी मुर्दों की क़ब्र के पास, या मुराद हैं वह लोग जो मरने से क़रीब हों।

3. हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु से मरवी, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सूरह यासीन पढ़ो– बिला शुबहा इस में दस बरकतें हैं–

1. इसे भूका पढ़ेगा आसूदा होगा।
2. कोई प्यासा पढ़ेगा सैराब होगा।
3. कोई नंगा पढ़ेगा लिबास पहनेगा।
4. कोई ग़ैर शादी शुदा पढ़ेगा निकाह़ हो जाएगा।
5. कोई ख़ौफज़दा पढ़ेगा उसका ख़ौफ़ ख़त्म होगा।
6. कोई क़ैदी पढ़ेगा रिहाई मिल जाएगी।
7. कोई मुसाफ़िर पढ़ेगा तो तआवुन मिलेगा।
8. मक़रूज़ पढ़ेगा क़र्ज़ अदा होगा।
9. जिस की कोई चीज़ गुम हो पढ़े तो मिल जाये।
10. क़रीबे मर्ग पर पढ़ी जायेगी तो रूह़ निकलने पर आसानी होगी। (कंजुल उम्माल 1/144)

4. हु.जूर ने फ़रमाया जो हर रात सूरह यासीन पढ़ता है वह जब मरता है तो शहीद मरता है।

(दुर्रे मन्सूर 5/257)

5. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स दिन के इब्तेदाई हि़स्सा में सूरह

यासीन पढ़ता है उसकी ह़ाजतें पूरी की जाती हैं।

(मिश्कात 189)

फ़ज़ाइले .कुरआन

.कुरआन शरीफ़ की तिलावत और तालीम के बहुत फ़ज़ाइल अह़ादीस में आये हैं। बाज़ अहम सूरतों के फ़ज़ाइल बयान भी हुए हैं। जिन में चन्द का ज़िक्र हो चुका है। बाक़ी .कुरआन दूसरी सूरतों के लिए 'फ़ज़ाइले .कुरआन' नामी किताब मुसन्निफ़ मौलाना इफ़्तेख़ार अह़मद क़ादरी रज़वी, शाया कर्दा अलमजमउ़ल इस्लामी मुबारकपुर मुलाहज़ा करें। जो उर्दू ज़बान में फ़ज़ाइले कुरआन पर सब से मबसूत और मुस्तनद किताब है।

दुरूद व सलाम

दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल व बरकात बहुत हैं और इस सिलसिले में अह़ादीस् भी बकसरत मरवी हैं। ज़ैल में सिर्फ़ एक जामेअ् ह़दीस पेश की जाती है।

ह़दीस्:– ह़ज़रत उबय बिन कअ़्ब रद़ियल्लाहु अन्हु ने

कहा। मैंने रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं आप पर बकसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूँ तो आप पर अपने दुरूद के लिए कितना वक़्त मुक़र्रर करूँ तो आपने फ़रमाया जो तुम चाहो। मैंने अर्ज़ किया चौथाई ह़िस्सा। फ़रमाया जो तुम चाहो, फिर यह कि अगर तुम इससे ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया निस्फ़ (आधा) फ़रमाया जो तुम्हारी मर्ज़ी हो, पस अगर ज़्यादा करो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। मैंने अ़र्ज़ किया तो दो तिहाई, फ़रमाया जो तुम्हारी ख़्वाहिश हो फिर अगर तुम बढ़ा दो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। मैंने अ़र्ज़ किया। मैं आप ही के लिए अपना तमाम दुरूद को ख़ास कर दूँगा। यानी तमाम औक़ात दुरूद ही में गुज़ारूँगा। (हु.जूर ने फ़रमाया) ऐसा है तब तो यह तुम्हारी सारी फ़िक्र को काफ़ी होगा। और तुम्हारे गुनाह भी बख़्शे जायेंगे।

(मिश्कात स. 86 बरिवायत तिर्मिज़ी)

इस ईमान अफ़रोज़ ह़दीस् से साबित हुआ कि अगर कोई मुसलमान अपने तमाम औक़ात में दुरूद शरीफ़ की

ब–र–कातुहू अस्सलामु अलैना व अला अिबादिल्लाहिस्–सालिहीन॰

○ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ۔

अल्लाहुम्म अन्ज़िल्हुल्–मक्–अ–दल् मुकर्र–ब अिन्–द–क यौमल् किया–मति॰

हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो मुझ पर दुरूद भेजे फिर यह कलिमात (اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ) (अल्लाहुम्–म अन्ज़िल्हु) कहे उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब है।

दुरूद व सलाम के यह सीग़े जो अहादीस् में वारिद हैं बहरहाल अफ़ज़ल हैं। लिहाज़ा जहाँ तक हो सके इनका एहतेमाम करना चाहिए। लेकिन इनके इलावा जो दुरूद शरीफ़ भी पढ़ेगा जाइज़ और मूजिबे बरकत होगा। और अहादीस् के बाद बु.जुर्गाने दीन के इरशाद फ़रमूदा दुरूद के सैग़ों का विर्द करना भी बेहतर है कि औलिया अल्लाह

की ज़बानों की बरकतें भी हासिल होंगी।

बाज़ अहादीस व आसारे सहाबा में हर दुआ के अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ने का हुक्म है और यह कि इसके बग़ैर दुआ क़बूल नहीं होती। लिहाज़ा जिस जिस मौक़ा की दुआ पढ़नी हो उसके अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ भी ज़रूर पढ़ लिया जाये। ताकि दुरूद शरीफ़ के फ़वाइद व बरकात हासिल हों और दुआ भी क़बूल हो।

बाज़ दुरूद शरीफ़ बु.जुर्गों के मामूलात से हैं वह यह हैं–

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

सल्लल्लाहु अलन्नबीय्यिल् उम्मिय्यि व आलिही सल्लल्लाहु व सल्ल–म सलातंव्–व सलामन् अलै–क या रसूलल्लाहि॰

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَاٰلِهٖ
وَسَلَّمَ

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मिय्यि व आलिही व सल्ल–म॰

اَللّٰهُ رَبُّ مُحَمَّدٍ صَلّٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَعَلٰى ذَوِيْهِ وَاٰلِهٖ اَبَدَ الدُّهُوْرِ وَكَرَّمَا

अल्लाहु रब्बु मुह़म्मदिन् स़ल्–ल अ़लैहि व सल्ल–म व अ़ला ज़वीहि व आलिही अ–ब–दद्–दुहूरि व कर्रमा॰

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा् स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिवं व अ़ला आलिही व सल्लिम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ
وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

अल्लाहुम्मा् स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दिका् व रसूलिका् व स़ल्लि अ़लल–मुअ्मिनीना् वल मुअ्मिनाति वल मुस्लिमीना् वल मुस्लिमाति

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ قَدْ ضَاقَتْ
حِيْلَتِيْ اَدْرِكْنِيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

अल्लाहुम्मा् स़ल्लि व स़ल्लिम व बारिक अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिन क़द दाक़त ही–लती–अद–रिक्नी या रसूलल्लाह

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰينَا
مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदि
व अ़ला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन क
तुहिब्बु व तर्दा लहू